

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
1. अमृतवेले शक्तिशाली योग रहा?																															
2. कर्मन्द्रियों ने धोखा तो नहीं दिया?																															
3. देही- अभिमानी स्थिति में रहने का अभ्यास किया?																															
4. विश्व में पवित्रता के वायब्रेशन फैलाने की सेवा की?																															
5. रात्रि सोने से पूर्व आधा घंटा योग किया?																															

**चलते-फिरते विशेष अभ्यास : - मुझ परम पवित्र फरिश्ते से सारे विश्व में पवित्रता के वायब्रेशन फैल रहे हैं..... ।**

1 से 5 तक - मैं देही, विदेही, अशरीरी आत्मा हूँ।

6 से 10 तक - मैं परमधाम निवासी परम पवित्र आत्मा हूँ।

11 से 15 तक - मैं शिव पिता से कम्बाइंड मास्टर बीजरूप आत्मा हूँ।

16 से 20 तक - मैं शरीर को चलाने वाली सम्पूर्ण निर्विकारी आत्मा हूँ।

21 से 25 तक - मैं इस पुरानी दुनिया में मेहमान, महान आत्मा हूँ।

26 से 31 तक - मैं लाइट हाउस, माइट हाउस आत्मा हूँ।

योग में रहकर यह कर्तव्य रोजाना अवश्य ही करने हैं

1. अमृतवेले स्वयं को सर्वशक्तियों से फुलचार्ज करना है।
2. बाबा से कम्बाइंड होकर स्वयं के विकर्मों को भस्म करना है।
3. ब्राह्मणों को पवित्रता, तपस्वी वायुमण्डल बनाने की सकाश देनी है।
4. रोगी, दुःखी, अशान्त, आत्माओं को शान्ति का सकाश देना,
5. प्रकृति के पांचों तत्वों को पावन बनाने की सकाश देना।
6. भक्त आत्माओं को अपने ईष्टदेव का साक्षात्कार कराना।
7. उन आत्माओं से क्षमा मांगना जिनको हमने दुःख दिया है।
8. उन आत्माओं को माफ करना जिन्होंने हमें दुःख दिया है।
9. उन आत्माओं को धन्यवाद देना है जिन्होंने हमें सहयोग दिया है।
10. नास्तिक आत्माओं को ईश्वरीय प्रेम से भरपूर करने की सकाश देना।
11. सर्व आत्माओं के विकारों को भस्म करने को ज्वालारूप का सकाश देना।